जनवाचन आंदोलन

जन वाचन आंदोलन का मकसद है। किताबों को गांव-गांव ले जाना, इन किताबों को नवपाठकों के बीच पढ़कर सुनाना और पढ़वाकर सुनना। गांव की जनता के पास आज भी पढ़ने-लिखने के लिए स्तरीय किताबें नहीं हैं और जो हैं भी वे बेहद महंगी हैं। भारत ज्ञान विज्ञान समिति ग्रामीण जन तक कम कीमत और सरल भाषा में देशभर के मशहूर लेखकों की किताबें पहुंचाना चाहती है, ताकि गांव-गांव में जन वाचन, पढ़ाई और पुस्तकालय संस्कृति पैदा हो सके। संपूर्ण साक्षरता अभियान से जो नवपाठक निकलकर सामने आए हैं, वे अपने साक्षरता के अर्जित कौशल को बनाए रख सकें, उनके सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना का स्तर बढ़े और वे जागरूक होकर अपने बुनियादी हकों की लड़ाई के लिए लामबंद हो सकें, यह इस अभियान का प्राथमिक उद्देश्य है। भारतीय लोकतंत्र की रक्षा के लिए गांव के लोग आगे आएं, इसके लिए भी इस तरह की चेतना का विकास जरूरी है। साक्षरता केवल अक्षर सीखने का काम नहीं है, यह पूरी दुनिया को जानने का काम है।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य : `10 रुपये

बाज़ी

ल्यू शाओ थाङ

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

बाज़ी: *Bajee*
लेखक: ल्यू शाओ थाङ
चीनी से अनुवाद: सुन पाओ कांङ
रूपान्तरकार : त्रिनेत्र जोशी

नवपाठकों के लिए भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित
'चकमक' से साभार

पुस्तकमाला संपादक: असद ज़ैदी और विष्णु नागर
कार्यकारी संपादक: संजय कुमार
Series Editor : Asad Zaidi and Vishnu Nagar
Executive Editor : Sanjay Kumar

रेखांकन : कैरन
लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष: 1997,1999, 2003

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा देशभर में चलाए जा रहे जन वाचन आंदोलन के तहत किया गया है ताकि लोगों में पढ़ने-लिखने की आदत पैदा हो सके। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य गांव के पाठकों को सस्ती और सरल भाषा में देश के मशहूर रचनाकर्मियों द्वारा लिखी गई उत्कृष्ट पुस्तकें उपलब्ध करवाना है। खासकर उन नवपाठकों के लिए जो देशभर में चलाए गए संपूर्ण साक्षरता अभियान से निकलकर सामने आए हैं।

मूल्य:10 रुपये

Published by ***Bharat Gyan Vigyan Samithi****, Basement of Y.W.A. Hostel No. II,*
G-Block, Saket , New Delhi - 110017, Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773,
email: bgvs@vsnl.net

बाज़ी

ल्यू शाओ थाङ

बाज़ी

नदी के किनारे जुगनू उड़ रहे थे कभी बनफशे की झाड़ियों में चमक जाते थे और कभी सिरकियों में। मेंढक की आवाज़ इस प्रकार सुनाई पड़ रही थी जैसे किसी तूंबे की आवाज़ हो। फिर झींगुर की बोली से मिलकर ऐसी लग रही थी जैसे गर्मी की रात में युगल गान चल रहा हो। चिरायते के जलने से आकाश में धुआँ छा गया था। बूढ़े गर्मी से व्याकुल पंखे हाँक रहे थे।

चाँदनी रात में हम लोग एक गिरे हुए पेड़ की डाल पर एक दूसरे से सटे हुऐ बैठे थे। सभी साथी पिशाच की कहानी सुनने की कोशिश में थे। कहानी जैसे-जैसे डरावनी होती जा रही थी, वैसे-वैसे हम लोग भी एक दूसरे से सटते जा रहे थे। अंत में एक प्रश्न उठा कि कौन सबसे अधिक बहादुर है। इस पर सभी झगड़ने लगे .... मेरी आवाज़ ने सबकी आवाज़ को दबा दिया।

''मैं सबसे अधिक बहादुर हूँ।''

''तुम ? हूं !'' छाङ श्वे 'उल्लू' बोला।

''क्यों ? नहीं मानते क्या ? ज़रूर तुमसे बहादुर हूँ।''

''खाली-मूली की बकबक से क्या फायदा ? हिम्मत हो तो बाज़ी लगाओ!'' छाङश्वे बाला। यह कहते हुए उसकी दोनों आँखें बिल्कुल उल्लू की तरह बाहर निकल आईं।

''मैं! हिम्मत नहीं है क्या मुझमें, ज़रूर तुमसे बाज़ी लगाऊँगा। हम दोनों की शर्त यह है कि मैं अँधेरी रात में 'वाङ की कब्र पर' जाऊंगा और वहाँ से एक बबूल का फूल तोड़कर लाऊँगा, ... तो समझो मैं जीत गया। बाज़ी का माल है, पाँच बटेर के अंडे और दो चपत।''

(पाठक समझ गये होंगे कि जीतने वाला, हारने वाले को दो चपत लगाएगा और हारने वाला, जीतने वाले को पाँच बटेर के अंडे देगा।)

''.... मैं सच कहता हूँ मुझे बटेर के अंडों का लालच नहीं है, मैं तो केवल इज्जत रखने के लिए यह करूँगा। खास तौर से मुझे इस शैतान 'उल्लू' से द्वेष जो है।''

शर्त लगाने के बाद मज़ाक ही मज़ाक में मैं तुरंत 'वाङ की कब्र' की ओर चल पड़ा। शुरू में मैं बहुत ही मज़बूती के साथ चल रहा था, पर जब गाँव के नुक्कड़ पर गुलबहार की झाड़ियों के पास पहुँचा तो ऐसा लगने लगा मानों रात और अँधेरी हो गई हो। झींगुर की चीं-चीं लगातार सुनाई पड़ रही थी मानो वह मुझे बता रही हो कि जंगल कितना विशाल है और मकबरे कितने भयंकर। मेरे कदम धीरे-धीरे शिथिल पड़ने लगे और मैं यकायक रूक गया।

मैं 'वाङ' की क्रब से अच्छी तरह परिचित हूँ। मैं आँख बंद

करके भी वहाँ से बबूल का फूल तोड़कर ला सकता हूँ। पर वह तो दिन की बात है, इस समय तो अँधेरी रात है।.....

रात की हवा आँचल को उड़ाए ले जा रही थी। आकाश में चमकते हुए तारों के अलावा चारों ओर गहरी धुंध छाई हुई थी और गंभीर सन्नाटा था। सबसे बुरी बात तो तब होगी जब कि कहानी का जो भूत या पिशाच है, वह अचानक सामने आ जाए! मैं पिशाच-विशाच पर विश्वास नहीं करता। मैं जानता हूँ कि यह तो गढ़ी हुई बात है। पर चिंता तो इस बात की थी कि कहीं मेरी आँखों को धोखा हो जाए और मैं भ्रम में कुछ देख लूँ तो कहीं डर के मारे मर न जाऊँ!

यह सोचते-सोचते मेरी इच्छा हुई कि वापस लौट चलूँ, ... दो चपत खा लूँगा। लेकिन, इतने में अचानक एक लड़की गुलबहार की झाड़ियों से निकली। उसका नाम छिन ची था। वह उल्लू की छोटी बहन थी और मेरी अच्छी दोस्त थी।

''तुम उन लोगों के चक्कर में मत आओ,'' छिन ची ने कहा, ''मेरा भाई और भी कई शैतान तुमको उल्लू बनाना चाहते हैं। उनका इरादा है कि तुम्हें इतना डराएँ कि तुम्हारी पतलून तर-बतर हो जाए। बदमाश! .... मैं तुमको यही सूचना देने आयी हूँ!''

''मैंने तुम्हारे भाई से बाज़ी लगाई है, पाँच बटेर के अंडों और दो चपत की।'' मैं करुण स्वर में बोला। मैं जानता हूँ कि उस लड़की को मुझसे निश्चित ही हमदर्दी थी।

''मेरे भाई से नहीं हारना चाहते!'' छिन ची बोली। ''चलो, मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी, मेरे पास टार्च भी है।'' पर उसकी टार्च एक शीशे की बोतल थी, जिसमें बहुत से जुगनू बंद थे। इस रोशनी

में दो कदम तक सभी चीज़ें देखी जा सकती थीं। मैं उसका हाथ पकड़े मकबरे की ओर चलने लगा। एक साथिन के होने से रात्रि का डर जाता रहा और ..... साथिन भी एक छोटी कोमल लड़की।

रास्ते भर वह बोलती रही और रुकने का नाम न लिया। वह मुझे वे कहानियाँ सुनाती रही, जो कि उसने अपनी नानी से सुनी थीं। उसने आकाश में चमकते हुए तारों की ओर संकेत कर मुझे बताया, ''वह हसिया-नक्षत्र है, वह चीन्यू-नक्षत्र है, वह बहंगी-नक्षत्र है .... हरेक नक्षत्र की अपनी-अपनी कहानी है। पर ये सभी नक्षत्र मेरी नज़र में एक ही प्रकार के हैं, बहंगी-नक्षत्र का आकार बहंगी से एकदम भिन्न है।'' उसकी इन कहानियों ने मुझे भूत-पिशाच सब कुछ भुला दिए और चलते-चलते हम न जाने कब कब्र के पास आ पहुँचे।

छिन ची बोली ''वे छोटे रास्ते से तुम से पहले यहाँ आ पहुँचे हैं और फाटक के पीछे छिप कर तुमको डराना चाहेंगे। हमें उनकी चाल में नहीं आना चाहिए। हम फाटक से नहीं घुसेंगे, हम दीवार के बीच सेंध से अंदर जाएँगे।'' हम दोनों ने दीवार की सेंध ढूँढी और और लतर को पकड़ कर रेंगते हुए दीवार की सेंध से अंदर घुस गए।

सारी कब्र मेंढकों की 'टर्र-टर्र' से गूँज रही थी। ऐसा लगता था मानों मेंढक यहाँ के शासक हों। दो तीन साँप हमारे नजदीक से रेंगते हुए निकल गए। कई कब्रों के बीच में खड़े होकर हमारे लिए यह पता लगाना मुश्किल हो गया कि किस तरफ से जाना ठीक होगा। इस 'वाङ के मकबरे' का निर्माण आपात-सहायता संस्था द्वारा किया गया है। कहने को तो वह 'कब्रिस्तान' है, लेकिन वास्तव

में यहाँ यों ही कुछ मुर्दे गाड़ दिए गए थे। कभी-कभी मुर्दे के लिए ताबूत भी नहीं होता था और वह चटाई में लपेट कर जमीन में गाड़ दिया जाता था। दो वर्ष पहले, हम यहाँ, अक्सर झींगुर पकड़ने आया करते थे। एक बार हमें एक मृत-व्यक्ति के टखने की हड्डी भी मिली थी। मैं इतना डर गया था, लगा कि कहीं बीमार न पड़ जाऊँ।

हम अभी एक बड़ी कब्र के पास खड़े ही थे कि कब्र पर उगी हुई घास हिलती दिखी। ऐसा लगता था जैसे एक बड़ा हाथ सर खुजला रहा है। कहानी में जो भूत-पिशाच थे, वे अचानक मेरे दिमाग में चक्कर काटने लगे। मेरी गर्दन कड़ी हो गई। सिर्फ सीधे देख सकता था, मुड़ नहीं सकता था। मैं खड़ा रह गया, पर छिन ची अपने स्वाभाविक रूप में थी। शायद उसने इन अभागे भूतों की

कहानियाँ कभी नहीं सुनी थीं।

वह बोली, ''चलो यहाँ से कुछ ही दूर पर बबूल का फूल है।'' वह मेरा हाथ छोड़कर आगे चलने लगी, मैं जल्दी से उसके साथ हो लिया और मैंने उसका हाथ पकड़ लिया। दिल में बहुत डर था कि अगर छिन ची अकेले गई तो .....

छिन ची बोली ''क्या हुआ ? क्यों लड़खड़ाते हुए चल रहे हो ? क्या रास्ता नहीं दिखाई पड़ रहा है ?'' यह कहकर उसने 'टार्च' से मुझे रास्ता दिखाया और अपनी बाँहे मेरी गर्दन में डाल दी। इस तरह मेरी हिम्मत थोड़ी बढ़ी।

आखिकरकार हमने बबूल का फूल ढूँढ लिया। एक फूल तोड़कर हम दीवार की सेंध से मकबरे के बाहर निकले। छिन ची के हाथ ज्यो के त्यों मेरे गले में पड़े थे। हममें इतना प्रेम था कि अगर दूसरे लड़के देख लें तो न जाने क्या-क्या उड़ाने लगें। मैं सच कहता हूँ कि निर्जन रास्ते में मुझे छिन ची के साथ सटकर चलना पसंद था।

मैं छिन ची का बहुत कृतज्ञ था। आज अगर वह न आती, तो न जाने मेरी हालत क्या होती ? डर से वापस लौटता, लोगों का मज़ाक सहता, दो चपत खाता, और दूसरे दिन से जानलेवा पाँच बटेर के अंडे ढूंढने पड़ते। पर अभी तो बबूल का फूल मेरे हाथ में है और मैं विजयी हूँ।

घर लौटते समय, रास्ते में छिन ची और भी चंचल दिखाई पड़ रही थी। वह मुझे पहाड़ी गीत सुनाती चल रही थी और साथ-साथ 'टार्च' भी हिलाती चल रही थी। जुगनू रोशनी देख कर हमारे

पास उड़ने लगे और थोड़ी ही देर में हमने बहुत से जुगनू पकड़ लिए .... पूरी एक बोतल।

इतने में हम गाँव के नुक्कड़ पर पहुँचे। हमने नदी के किनारे एक दीप हिलता देखा। छिन ची चिल्ला कर बोली, ''अरे! देखो,

वहाँ चीं खुवे चाचा केकड़े पकड़ रहे हैं।.....चीं खुवे चाचा ....।'' नदी के किनारे से 'हाँ' की आवाज़ आई। यह चीं खुवे चाचा की आवाज़ थी।

छिन ची बोली, ''तुम अकेले वापस जाओ। मैं, चीं खुवे चाचा को केकड़े पकड़ते हुए देखना चाहती हूँ। मैं उनकी नाव पर चढ़ूँगी, और नाव चलाने में उनकी मदद करूँगी।''

मैं उसे धन्यवाद के कुछ शब्द कहना चाहता था, पर मेरे हकलाते हुए मुँह से धन्यवाद का एक भी शब्द नहीं निकल पाया। मैं बोला ''छिन ची! मैं तुम्हें बटेर के तीन अंडे दूँगा।'' यह बात मुँह से निकलते ही मुझे पछतावा हुआ कि क्यों इस तरह की बात उससे कही। क्या उसे बटेर के अंडों का लालच था? क्या उसने बटेर के अंडे के लिए मेरी मदद की थी?

लड़कियों के सामने मैं हमेशा बेवकूफी कर बैठता था। मुझे बात करने की भी तमीज़ नहीं थी।

छिन ची बोली, ''मैं बटेर के अंडे नहीं चाहती।'' फिर उसने अचानक अपने मुँह को मेरे कान के पास लाकर धीरे से कहा, ''मेरी तुमसे दोस्ती है, समझते हो? मेरी किसी दूसरे से दोस्ती नहीं है, सिर्फ तुमसे दोस्ती है!'' यह बात कहकर वह हँसते हुए नदी के किनारे पर जलते हुए अलाव की ओर दौड़ गई।

इस समय हसिया-नक्षत्र तथा बहंगी-नक्षत्र का स्थान बदल गया था। मैं उनको नहीं ढूँढ सकता था। रात की हवा चल रही थी पहले से अधिक ठंड जान पड़ रही थी। मैं गाँव की तरफ चलने लगा। मेरे कदम इतने हल्के पड़ रहे थे, जैसे मैं उड़ रहा होऊँ।

झींगुर की बोली अब भी उतनी ही गंभीर थी ... इस आवाज़ से मैदान और भी विशाल एवं सुनसान लग रहा था। पर थी बहुत सुरीली और मधुर आवाज़ .....।

मैं लड़कों के पास पहुँचा और बबूल का फूल छाङ श्वे 'उल्लू' को दे दिया। उन लोगों ने विस्तार से जाँच-पड़ताल की और माना कि यह फूल सचमुच 'वाङ के मकबरे' का है। सभी चुप रह गए।

दूसरे दिन, चाँदनी रात में, फिर चिरायते का धुआँ उठ रहा था। बूढ़े लोग पंखे झल रहे थे और हँसोड़ कहानियाँ सुना रहे थे। लड़कियाँ नदी के किनारे जुगनू पकड़ती हुई दौड़ रही थीं।

उल्लू ने ईमानदारी से अपना वादा पूरा किया। लड़कों की मौजूदगी में हमने बटेर के अंडे एवं चपत का आदान-प्रदान किया। बटेर के अंडे बहुत ताज़े थे। मैंने उस पर रहम खाकर उसे हल्के से केवल दो चपत लगाए, पर शायद दूसरा चपत ज़रूर कुछ ज़ोरदार था।

''क्यों ? तुमसे बहादुर हूँ, मान लिया न ?'' मैंने कहा।

''मान लिया ?'' छाङ श्वे बोला ''हूं ! हिम्मत हो तो फिर बाज़ी लगाओ ! तुम डींग न मारो, तुम सचमुच के बहादुर नहीं हो, कल ज़रूर कोई तुम्हारे साथ गया था।''

''कौन ?'' मैं कड़े स्वर में बोला। मेरा चेहरा लाल हो गया। मैं जानता था कि वे तिकड़म लगा रहे थे। सभी लड़के शोर मचाने लगे ''छोटी लड़की-छिन ची। तुम दोनों हमेशा एक साथ खेलते हो।'' और वे गाने लगे,

'छोटे दम्पति, छोटे दम्पति,

दो चने खा लें, दो चने खा लें,

सिर से सिर भिड़ाकर .....

मैं जोर से चिल्लाया ''झूठ बोलते हो तुम!''

''नहीं, हम झूठ नहीं बोल रहे।''

लज्जा से कहीं मेरे आँसू न गिर पड़ें। उस समय, हम इस बात को बहुत बड़ी बात मानते थे। उस समय सभी, लड़की के प्रति अपनी कोई भी 'भावना' मानने से इंकार करते थे। जैसे लड़की से दोस्ती होना एक लज्जा की बात हो।

मैं बोला, ''मेरी कभी भी छिन ची से दोस्ती नहीं हुई। वह वह है और मैं मैं हूँ।''

उल्लू बोला, ''क्यों बकवास करते हो?''

''तुम्हें विश्वास नहीं आता तो मैं क्या करूं?'' मैंने कहा।

उल्लू बोला, ''अगर तुम छिन ची को मारने का साहस करो तो हम लोगों को विश्वास हो जाएगा।'' यह उल्लू! सचमूच वह उल्लू से भी बुरा था। वह मुझे उकसा रहा था कि मैं छिन ची को मारूँ।

मुझे, आज भी यह बात याद आने पर 'उल्लू' से नफरत होती है। पर उस समय लज्जा से मेरा सर चक्कर खाने लगा था। पता नहीं क्यों मैंने इस हास्यापद शर्त को स्वीकार कर लिया था।

''अच्छा! मैं ज़रूर उसे मारूँगा।'' मैं बोला।

उल्लू बोला, ''तुममें उसे मारने का साहस नहीं है, मैं तुम्हारे साथ बाज़ी लगा सकता हूँ, तुम बाज़ी लगाने से डरते हो। मेरे पास

तीन बटेर के अंडे और हैं, मैं इन तीन अंडों से तुम्हारे साथ फिर बाज़ी लगा सकता हूँ।''

मैं कितना बेवकूफ था। बाज़ी क्यों लगा ली? ऐसा लगा था जैसे ये तीनों अंडे सोने के हों। ये सचमुच ही सोने के तीन अंडे होते, फिर भी मुझे उससे बाज़ी नहीं लगानी चाहिए थी। बाज़ी लगाने की चीज़ बटेर के अंडे नहीं थे, बल्कि दुनिया की एक दुर्लभ चीज़ थी .... सबसे पवित्र, सबसे कीमती एक लड़की की दोस्ती।

मगर मैं इतना बेवकूफ था कि मैं लड़कियों के पास जा पहुँचा, वे घरौंदे बनाने का खेल खेल रही थीं। मैं छीन ची के सामने गया, उस समय छिन ची कंकड़ियाँ उछाल रही थी। उसे कैसे मालूम होता कि मैं क्या करूँगा? वह जरा भी सतर्क नहीं थी, वैसे ही कंकड़ियाँ उछालती रही। कंकड़ियाँ उछालने से उसके चेहरे पर खूब पसीना बह आया था, पसीने से तर-बतर बाल माथे पर लटक आए थे और वह हल्की-हल्की हाँफ भी रही थी। मैं दुविधा में पड़ गया पर मेरे पीठ पीछे कोई खाँस रहा था, कोई हँस रहा था और जैसे कोई फुसफुसा रहा था कि मैंने कहा था न कि ''तुममें साहस नहीं है .....।''

मैंने दिल कड़ा किया और पास जा कर छिन को एक धक्का दिया। मुझे तो वह हल्का-सा लगा लेकिन छिन ची फौरन ज़मीन पर गिर पड़ी। मैंने देखकर भी देखना न चाहा, जल्दी से मुड़कर वापस लौट आया।

सभी लड़के जोर से हँस पड़े। उन लोगों का उद्देश्य पूरा हो गया था। वे मुझे चक्कर में आया देख बहुत संतुष्ट हुए। ये बदमाश!

इसके बाद छिन ची के रोने की आवाज आती रही। मुझे फौरन एहसास हो गया कि मैंने गलती की है, मैंने बेवकूफी की है, पर देर हो चुकी थी।

मैंने बाज़ी से मिले बटेर के अंडे हाथ में लिए। लगा जैसे जलते हुए अंगारे हों। बहुत बेचैन था मैं। मैंने छिपकर छिन ची की ओर नजर दौड़ाई, देखा कि वह ज़मीन पर बैठी हुई आँसू पोंछ रही है। थोड़ी देर बाद वह उठ खड़ी हुई और घर की ओर चल पड़ी। सामने से गुजरते समय उसने मुझ पर एक नज़र डाली, आँसू के पीछे की नज़र इतनी नफरत से भरी थी कि मैं देखकर बेचैन हो उठा। वह धीरे से एक शब्द बोली, 'हृदयहीन' और चली गई।

मैं खड़ा रह गया, खेलने की इच्छा जाती रही। चिरायता

धीरे-धीरे बुझ गया। लोग अपने-अपने घर लौट गए, पर छिन ची के रोने की आवाज़ बहुत देर तक मेरे दिमाग में कौंधती रही।

तब से छिन ची ने कभी मेरी परवाह नहीं की। जब भी मुझसे मिलती घोर नफरत की निगाह से देखती और फौरन मुँह मोड़ लेती। मैंने अनेक बार उसको समझाना चाहा और माफी माँगनी चाही, पर हर बार उसके ठंडे भाव को देखकर मैं सकपकाया रह जाता। जब मुझे वह दिखाई पड़ती मेरा बदन तपने लगता, पसीना बहने लगता। अफसोस और पछतावे की सताइश हो गई थी मुझे। तब से छिन ची ने कभी मेरी परवाह नहीं की, यहाँ तक कि अठारह वर्ष तक भी यानी जिस साल वह घर से विदा हुई, उसने मुझसे बात तक नहीं की।

❑❑❑

(पहल से साभार)